गिजुभाई का गुलदस्ता-7

नकल बिन अकल

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, प्रस्तुति और चित्रांकन

आबिद सुरती

नेहरू बाल पुस्तकालय

गिजुभाई का गुलदस्ता-7

नकल बिन अकल

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, प्रस्तुति और चित्रांकन
आबिद सुरती

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 978-81-237-5150-4

पहला संस्करण : 2007

पहली आवृत्ति : 2008 *(शक 1930)*

© नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 2007

Nakal Bin Akal *(Hindi)*

रु. 40.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

प्लॉट नं. 5, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

आप उन्नीस तो हम बीस

लड्डू का स्वाद

बेगम बटाना

भूतों का पिता

अंट-संट

नकल बिन अकल

बंदरिया खाए सिवईंया

शायर का भुर्ता

गंगाराम और मंगाराम

गाती चिड़िया

कौआ चला मैना की चाल

शिक्षक भाई-बहनों से

लीजिए, ये हैं बाल-कथाएं। आप बच्चों को इन्हें सुनाइए। बच्चे इनको खुशी-खुशी और बार-बार सुनेंगे। आप इन्हें रसीले ढंग से कहिए, कहानी सुनाने के लहजे से कहिए। कहानी भी ऐसी चुनें, जो बच्चों की उम्र से मेल खाती हो। भैया मेरे, एक काम आप कभी न करना। ये कहानियां आप बच्चों को रटाना नहीं। बल्कि, पहले आप खुद अनुभव करें कि ये कहानियां जादू की छड़ी-सी हैं।

यदि आपको बच्चों के साथ प्यार का रिश्ता जोड़ना है तो उसकी नींव कहानी से डालें। यदि आपको बच्चों का प्यार पाना है तो कहानी भी एक जरिया है। पंडित बन कर कभी कहानी नहीं सुनाना। कील की तरह बोध ठोकने की कोशिश नहीं करना। कभी थोपना भी नहीं। यह तो बहती गंगा है। इसमें पहले आप डुबकी लगाएं, फिर बच्चों को भी नहलाएं।

गिजुभाई

आप उन्नीस तो हम बीस

एक था सेठ और एक थी सेठानी। एक शाम को सेठ दुकान से लौट कर खाट पर बैठा विश्राम कर रहा था। तभी सेठानी रसोईघर में से बोली, 'अजी सुनते हो लल्ला के बापू, मेरे मायके से एक नाई खबर लाया है कि वहां अकाल पड़ा है। लोग दाने-दाने को तरस रहे हैं। उसने यह भी बताया है कि मेरे बापू और मां सूख कर कांटा हो गए हैं।' सेठ ने कहा, 'अब इसमें हम क्या कर सकते हैं? हम भगवान तो नहीं हैं जो दो-चार बादल बरसा दें।'

सेठानी को बुरा लगा। वह गरज कर बोली, 'मैं कहती हूं, आज ही जाओ और एक गाड़ी भर कर वहां गेहूं डाल आओ। दूसरा, हमारे वहां गाय-गोरू की कमी है। साथ में एक गाय भी लेते जाओ।' सेठ सोच में पड़ गया। यकायक उसके दिमाग में रोशनी हुई। वह खाट पर से उठ रसोईघर में जा कर बोला, 'तुम रास्ते के लिए संबल तैयार कर दो। मैं कल मुंह अंधेरे ही चल दूंगा।' लल्ला पास खड़ा था। वह भी साथ जाने के लिए तैयार हो गया।

सेठ ने तड़के गाड़ी जोती। सेठानी ने

गाड़ी में गेहूं भरे। ठूंस-ठूंस कर भरे। फिर एक लिफाफे में पांच सौ रुपए डाल कर वह लिफाफा गेहूं के ढेर में छिपा दिया। उसने सोचा कि गेहूं कि साथ नकद भी उसके माता-पिता को मिल जाएगा। अंत में बैलगाड़ी के साथ एक गाय भी बांध दी। लल्ला लपक कर सेठ के बगल में बैठ गया। गाड़ी चल दी। थोड़ी देर बाद दोराहा आया। एक रास्ता सेठ के ससुराल वाले गांव को जाता था, दूसरा सेठ की बहन के गांव को। गाड़ी ससुराल जाने के बजाए बहन के यहां जाने के लिए चल पड़ी। यह देख लल्ला बोल उठा, 'यह रास्ता तो बुआजी के गांव का है। मामाजी के गांव का रास्ता पीछे छूट गया।'

सेठ ने तुनक कर कहा, 'बालिश्त भर के बुद्धू, तू क्या जाने कि कौन-सा रास्ता सही है और कौन-सा गलत।' लल्ला खामोश हो गया। गाड़ी आगे बढ़ती रही। शाम हुई। गाड़ी बहन के गांव पहुंची। वहां भी अकाल पड़ा था। नदी सूख गई थी। फसल नष्ट हो चुकी थी। घर-घर खाने के लाले पड़े थे।

भाई को आया देख बहन की खुशी का ठिकाना न रहा। एक तो भैया आए। दूसरे, गाड़ी-भर गेहूं के साथ एक दुधारू गाय भी लाए। बहन ने फटाफट रोटियां बनाईं। सब्जी तैयार की। बेसन के थोड़े लड्डू बनाए। अपने भैया और लल्ला को खूब मनुहार कर भोजन कराया।

बाप-बेटा दोनों ठाठ से बहन के घर दो रोज रहे और तीसरे रोज गाड़ी जोत कर घर वापस आए। सेठ को लौटा देख सेठानी ने पूछा, 'गेहूं दे आए? मेरे बापू को गाय कैसी लगी? वहां सब ठीक तो हैं न?' सेठ बोला, 'मुझे देर हो रही है। मैं दुकान पर जा रहा हूं। जो भी जानना हो, तुम लल्ला से पूछ लेना।' सेठ गया तो सेठानी लल्ला की ओर मुड़ी, 'क्यों रे निगोड़े, तेरे मामा ठीक-ठाक तो हैं न?'

लल्ला ने कहा, 'वहां मामा-वामा कोई नहीं था।' सेठानी बोली, 'शायद मामाजी किसी काम से बाहर गए होंगे। तेरी मामी तो कुशल-मंगल है न?' लल्ला ने कहा, 'लेकिन मां, वहां मामी भी तो नहीं थी, वहां तो बुआजी थीं। फूफाजी थे। दूसरे लोग भी थे।' लल्ला की बात सुन कर सेठानी असली बात समझ गई।

मन ही मन सेठानी ने कसम ली, 'देख लूंगी, सारा सामान अपनी बहन के घर डाल आए और जले पर नमक छिड़कने लल्ला को छोड़ गए। लल्ला के बापू, इसका बदला मैं जरूर लूंगी।' उसने तुरंत घूंघट काढ़ कर अपना माथा पीटना शुरू कर दिया। वह रोते-बिलखते हुए कह रही थी :

लुट गई मैं तो तबाह हो गई
गाड़ी भर गेहूं गए गाय भी गई
सौ-सौ के पांच हरे नोट भी गए
हाय रे, लल्ला की बुआ भी गई

आंगन में भीड़ इकट्ठा होने लगी। सब पूछने लगे, 'सेठानी आपको यह क्या हो गया है? आप क्यों रो रही हैं?' सेठानी ने बताया, 'लल्ला के बापू अपनी बहन के घर एक गाय और गाड़ी भर गेहूं पहुंचाने गए थे। हाय रे...वहां पता चला कि अकाल के कारण उनकी जवान बहन भूखों मरी है। हमारे सिर पर दुख का पहाड़ टूटा है।'

धीरे-धीरे सारा गांव इकट्ठा हो गए। सब लोग साथ मिल कर रोने और सिर पीटने लगे। जब दुकान पर सेठ को पता चला कि घर में कुहराम मचा है, तो वह भी दौड़ता हुआ आ पहुंचा। घर पर सब मातम कर रहे थे ओर चिल्ला रहे थे :

लुट गई मैं तो तबाह हो गए
गाड़ी भर गेहूं गए गाय भी गई
सौ-सौ के पांच हरे नोट भी गए
हाय रे, लल्ला की बुआ भी गई

सेठ समझदार था। सारी बात समझ में आ गई। उसके नहले पर सेठानी ने दहला चला था। उसी पल सेठ ने क्षमा मांगी और गाड़ी भर गेहूं और एक गाय ले कर ससुराल पहुंच गया। सारा सामान ससुराल में उंडेल कर लौटा, तभी सेठानी ने उसकी क्षमा कबूल की।

लड्डू का स्वाद

एक थी लोमड़ी और एक था खरगोश। दोनों में दोस्ती हो गई। एक रोज दोनों दोस्त गांव की ओर चले। कुछ दूर जाने पर दोराहा आया। एक रास्ता पूरब को जाता था, दूसरा पच्छम को। लोमड़ी बोली, 'मैं पच्छम वाले रास्ते पर जाऊंगी।' वह पच्छम वाले रास्ते पर चल पड़ी और

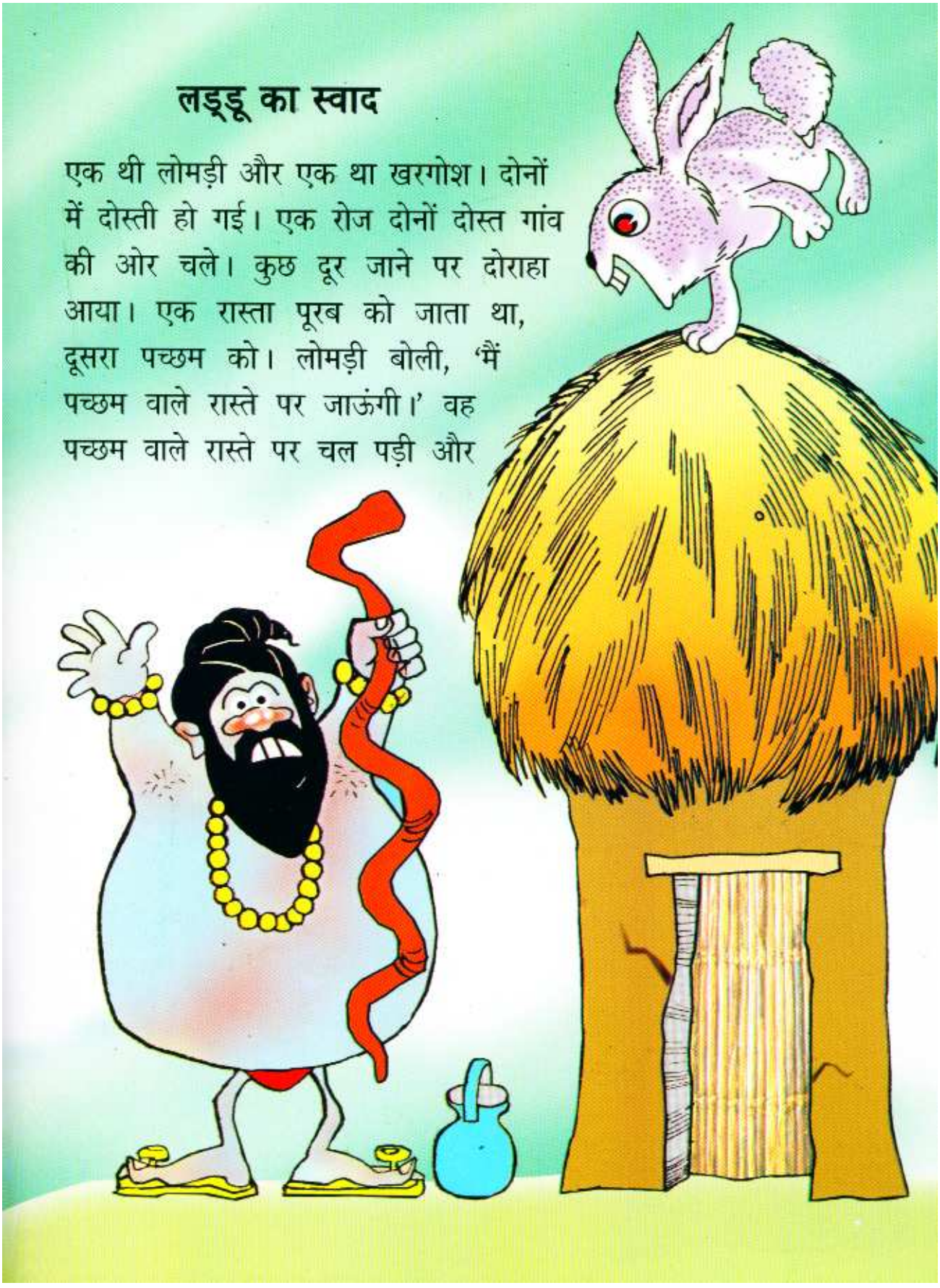

खरगोश ने पूरब वाला रास्ता चुना। उस रास्ते पर एक लंगोटधारी बाबा की कुटिया थी। खरगोश को जोर की भूख लगी थी। वह कुटिया में घुसा। भीतर उसे लड्डू दिखे। उसने सारे ही लड्डू चट कर दिए। फिर दरवाजे की कुंडी लगाई और घोड़े बेच कर सो गया। कुछ देर बाद बाबाजी आए। कुटिया का दरवाजा बंद था। उन्होंने बाहर से पुकारा, 'हमारी कुटिया में कौन घुसा है?' भीतर से खरगोश तन कर बोला :

मैं हूं महाराजों का राजा
खाऊं लड्डू पेड़े खाजा
भाग रे लंगोटे भाग यहां से
वरना बजा दूंगा तेरा बाजा

यह सुन कर बाबाजी ऐसे डरे कि गांव में जा कर मुखिया को बुला लाए। कुटिया की कुंडी खटखटा कर मुखिया ने पूछा, 'बाबाजी की कुटिया में कौन घुसा है?' भीतर से बुलंद आवाज में खरगोश बोला :

मैं हूं महाराजों का राजा
खाऊं लड्डू पेड़े खाजा
भाग रे मुखिया भाग यहां से
वरना बजा दूंगा तेरा बाजा

मुखिया भी ऐसा डरा कि दौड़ा-दौड़ा थाने गया और थानेदार को बुला लाया। थानेदार ने मूंछे मरोड़ते हुए पूछा, 'बाबाजी की कुटिया में कौन घुसा है?' खरगोश कड़कती हुई सख्त आवाज में बोला :

मैं हूं महाराजों का राजा
खाऊं लड्डू पेड़े खाजा

भाग रे थानेदार भाग यहां से
वरना बजा दूंगा तेरा बाजा

सुन कर थानेदार ऐसा डरा कि उसे बुखार चढ़ गया। अब बाबाजी और मुखिया क्या करते? वे दोनों भी चले गए। थोड़ी देर बाद खरगोश दरवाजा खोल कर बाहर निकला और लोमड़ी से मिल कर सारा किस्सा उसे सुनाया। लड्डू की बात सुन कर लोमड़ी के मुंह में पानी आ गया। वह बोली, 'मैं भी कुटिया में जाऊंगी।' खरगोश ने पूछा, 'अगर बाबाजी आ गए तो तुम क्या कहोगी?' वह सीना तान कर बोली :

मैं हूं महारानियों की रानी
खाऊं लड्डू खाऊं गुड़धानी
भाग रे लंगोटे भाग यहां से
वरना याद दिला दूंगी नानी

खरगोश बोला, 'ठीक है। जाओ, तुम भी लड्डूओं का मजा चख आओ।'

लोमड़ी तुरंत दौड़ी और बाबाजी की कुटिया में घुस कर ही उसने दम लिया। फिर दरवाजे में कुंडी लगा कर वह लड्डू खाने लगी। अभी उसने पहला लड्डू ही खत्म किया था कि बाबाजी आ पहुंचे। देखा तो दरवाजा बंद। फिर कौन घुसा होगा? वह बोले, 'हमारी कुटिया में कौन छिपा है?' भीतर से लोमड़ी चिल्लाई :

मैं हूं महारानियों की रानी
खाऊं लड्डू खाऊं गुड़धानी
भाग रे लंगोटे भाग यहां से
वरना याद दिला दूंगी नानी

बाबाजी ने उसकी पतली आवाज पहचान ली 'अरे, यह तो लोमड़ी है!' उन्होंने शोर मचा कर लोगों को इकट्ठा कर लिया। लोमड़ी घबरा गई। वह दरवाजा खोल कर भागने लगी, तो बाबाजी ने उसे पकड़ लिया और जम कर उसकी पिटाई की।

फिर पूछा, 'क्यों महारानियों की रानी, लड्डू का स्वाद कैसा लगा?' लोमड़ी क्या बोलती! दर्द से कराहती हुई वह वन में लौट गई।

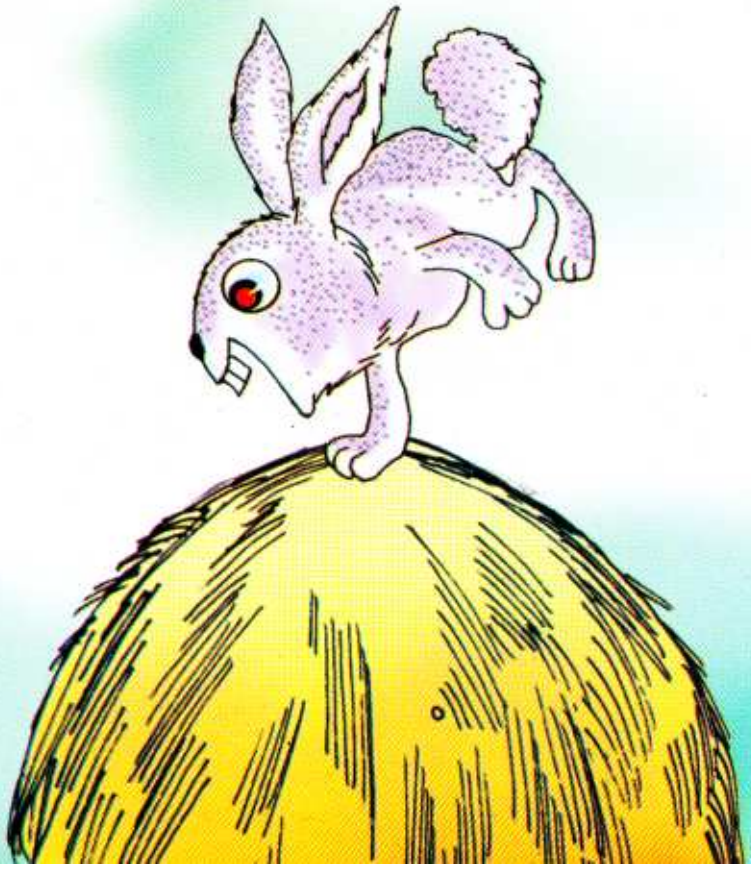

बेगम बटाना

एक था तैयब अली और एक थी उसकी बेगम। एक रोज बेगम भैंस दुहने बैठी थी कि उसे जोर से डकार आई, मानो पटाखा फूटा हो। उसने सोचा, यह तो बहुत बुरा हुआ। इस भैंस ने धमाका सुन लिया। वह ग्वाले से कहेगी और ग्वाला सारे गांव को बता देगा। मेरी तो भारी फजीहत होगी। अब क्या किया जाए?

कुछ न सूझा तो वह भैंस के आगे खड़ी हो कर उसे समझाने लगी, 'सुनो काली माता, धमाके की बात तुम किसी से कहोगी नहीं न?' तभी भैंस के

कान पर एक मक्खी बैठी और उसने सिर हिलाना शुरू किया। बेगम समझी, भैंस कह रही है कहूंगी...कहूंगी। अब? वह जरूर ग्वाले से कहेगी और ग्वाला सारे गांव में खबर फैला देगा।

बेगम घर में आ कर सिर पर हाथ धर कर बैठ गई। थोड़ी देर बाद तैयब अली आया। उसने बीवी को कोने में बैठ कर बिसूरते देखा तो पूछा, 'बेगम बटाना, आप चुपके-चुपके रो क्यों रही हैं? बेगम बोली, 'अब क्या बताऊं, बहुत ही बुरा हुआ है। मेरी तो जबान ही नहीं खुलती।' तैयब अली बोला, 'आखिर बात क्या है?' बेगम ने सारा किस्सा कह सुनाया। फिर जोड़ा 'मैंने भैंस को काफी समझाया, पर वह मानती ही नहीं। वह कहेगी ग्वाले से और ग्वाला कहेगा सारे गांव को। मैं गांव वालों को अपना मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहूंगी।'

तैयब अली ने कहा, 'यह सिर्फ आपकी नहीं, हमारी आबरू का भी सवाल है। डूब मरने की नौबत हमारी भी आएगी। चलो बेगम बटाना, आज ही रात में यह घर छोड़ कर हम दूसरे गांव चले जाएं।

रात होने पर दोनों ने मिल कर घर का सारा सामान बैलगाड़ी पर चढ़ाया और निकल पड़े। अभी वे गांव के सिवान तक ही पहुंचे थे कि एक संत्री ने पुकारा, 'गाड़ी में कौन है?' तैयब अली बुदबुदाया, 'क्या आप हमें नहीं जानते? हम तैयब अली ताहेर अली तोपवाला हैं।' संत्री ने फिर पूछा, 'लेकिन इतनी रात गए आप लोग जा कहां रहे हैं?' वह बोला, 'अब कैसे बताएं? हमारे सिर पर आफत आ उतरी है।' संत्री ने सच्चाई जानना चाही तो तैयब अली ने सारा किस्सा विस्तार से सुनाते हुए पूछा, 'अब आप ही बताइए, हम क्या करें?'

'यह तो बड़ा आसान है।' संत्री मुस्करा कर बोल, 'मैं अभी राजा से

प्रार्थना करके मनाही करवा देता हूं कि इस बारे में कोई भी आदमी किसी से कुछ न कहे।'

दूसरे रोज सवेरे दरबार में जा कर संत्री ने राजा से गुजारिश की। राजा ने सारे गांव में ढिंढोरा पिटवा दिया 'बेगम बटाना का यह राज कि उसने धड़ाम से डकार मारी थी, कोई किसी से नहीं कहेगा।'

भूतों का पिता

एक था लड़का। एक रोज वह काम की तलाश में मुंबई जाने के लिए तैयार हुआ। रास्ते में खाने के लिए मां ने उसे आलू के सात परांठे बना दिए। उन्हें टिफिन में रख कर लड़का पैदल चल पड़ा। थोड़ी देर बाद रास्ते में एक बावड़ी आई। दोपहर हो गई थी। लड़के ने सोचा, पेट में चूहे दौड़ रहे हैं। यहीं रुक जाऊं और टिफिन खा लूं।

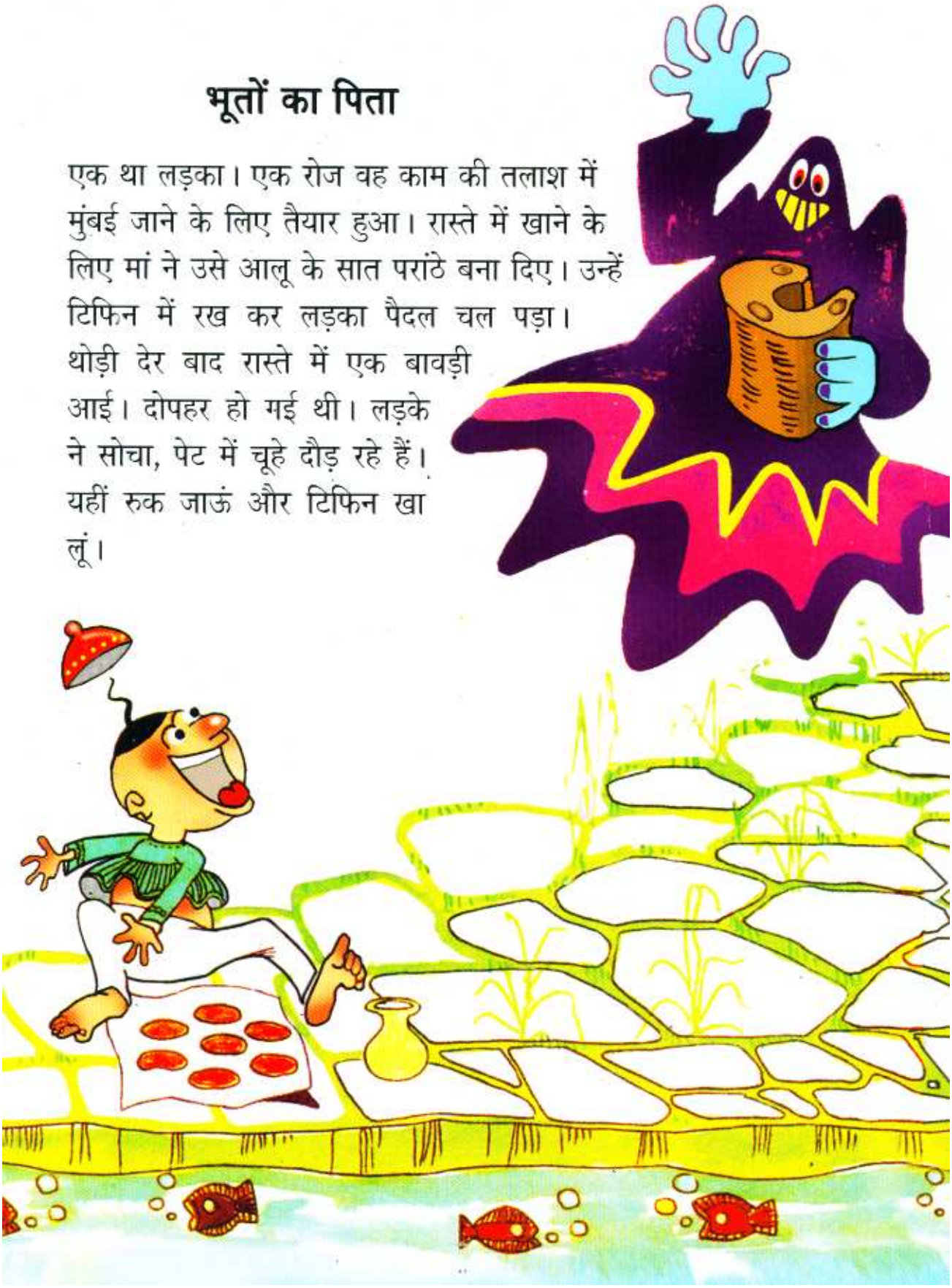

लड़का वहीं बैठ गया। उसने टिफिन खोल कर परांठे निकाले। उसे जोरों की भूख लगी थी। वह सोचते हुए कहने लगा कि इनमें से कितने खाऊं? एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं, चार खाऊं, पांच खाऊं, छह खाऊं या सातों को चट कर जाऊं।

अब बात यह हुई कि बावड़ी में सात भूत रहते थे। उन्होंने लड़के की बात सुनी। वे डर गए। उनमें से एक बोला, 'अरे, यह तीसमारखां कौन आ गया, जो हम सबको खा जाने की बात कर रहा है? जरूर कोई रुस्तमे-हिंद होगा।' दूसरे भूत ने कहा, 'चलो, हम उसे खुश कर दें, ताकि वह यहां से चला जाए।' भूतों के पास एक तिलस्मी चूल्हा था। उसे लेकर एक भूत डरते-डरते ऊपर आया और बोला, 'छोकरे, हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो तुम हमें खा जाने की बात करते हो। मांसाहार छोड़ो और शाकाहार की महिमा गाओ। जरूरत हो तो यह चूल्हा ले जाओ। यह ऐसा चमत्कारी है कि तुम इससे जो भी शाकाहारी पकवान मांगोगे, वह फटाफट मिल जाएगा।'

लड़के ने खुशी-खुशी चूल्हा लेते हुए मन में कहा, 'वाह! अपनी तो किस्मत का फाटक ही खुल गया। अब मुंबई जाने की क्या जरूरत है! वह घर की ओर लौट चला। रास्ते में बहन का मकान था। रात वह वहीं रुका। सोते वक्त उसने सोचा, क्यों न एक बार फिर बावड़ी पर जा कर कोई दूसरी चीज ले आऊं। उसने अपनी बहन को सारी बात बताई, चूल्हा उसे सौंपा और सात परांठे ले कर चल दिया।

दोपहर आने से पहले ही वह बावड़ी पर पहुंचा। किनारे बैठ कर उसने परांठे निकाले और बोलने लगा, 'एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं, चार खाऊं, पांच खाऊं, छह खाऊं या सातों को चट कर जाऊं।' यह सुन कर

भूतों में फिर खलबली मच गई। चंद भूत तो मारे डर के कांपने लगे। आखिर उनमें से एक भूत साहस कर ऊपर आया। वह अपने साथ एक जादुई मुर्गी लाया था। उसने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की, 'छोकरे, यह मुर्गी लो और हमारा पिंड छोड़ो। यह तुम्हें रोजाना सोने का एक अंडा देगी।' लड़का खुश हो कर मन ही मन बोला, इसे कहते हैं, छप्पर फाड़ के!

वह मुर्गी ले कर बहन के घर आया। वहां वह दो दिन रहा। उसके मन में फिर एक बार बावड़ी पर जाने की छटपटाहट शुरू हो गई। फिर एक बार वह परांठे बनवा कर बावड़ी पर पहुंचा और पहले की तरह बोला, 'एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं, चार खाऊं, पांच खाऊं, छह खाऊं या सातों को चट कर जाऊं।' यह सुन कर बड़े भूत कांपने लगे और छोटे भूत रोने लगे। फिर उनमें से एक भूत रोता हुआ ऊपर आया और दंडवत कर बोला, 'छोकरे, हमारा कलेवा करके तुम्हें क्या मिलेगा? बेहतर होगा कि तुम यह जूता लो और घर लौट जाओ। इसे तुम कहोगे 'चल रे जूते टन-टनाटन' तो यह उछल कर झूठे, मक्कार, पाखंडी लोगों पर टूट पड़ेगा। जब तक तुम इसे नहीं रोकोगे, यह चोट करता रहेगा।'

लड़का वापस अपनी बहन के घर आया। जब उसने अपना चूल्हा और मुर्गी मांगी तो बहन की नीयत बिगड़ी। उसने असली चूल्हा और मुर्गी छिपा दिए और बाजार से खरीदा हुआ नकली चूल्हा और मुर्गी भाई को सौंप दी। बहन रसोई में गई तो भाई ने सोचा, जरा देखूं कि ये असली हैं या नहीं। उसने चूल्हे से कहा, 'फटाफट रसगुल्ले दे।' लेकिन चूल्हे ने कुछ भी नहीं दिया। फिर उसने मुर्गी से कहा, 'झटपट सोने का अंडा दे।' मुर्गी ने अंडा देने के बजाए उसे चोंच मारी। लड़का भड़क उठा। वह समझ गया कि यह बहन की ही चाल है। पर चिंता की कोई बात नहीं। अभी पता चल जाएगा।

अब लड़के ने बहन को बुला कर कहा, 'यह जूता भी करामाती है। इसे तुम कहोगी कि चल रे जूते टन-टनाटन, तो यह नाचने लगेगा।' बहन ने सोचा...क्यों न मैं इसे भी रख लूं? तुरंत वह वैसा ही दूसरा जूता ले आई और चुपके से असली जूते की जगह पर रख दिया। फिर अपने कमरे में जा कर असली जूते से वह बोली, 'चल रे जूते टन-टनाटन, टन-टनाटन।'

करामारी जूता तुरंत उछला। यहां बहन के अलावा कोई और झूठा-मक्कार नहीं था। इसलिए वह बहन के सिर पर ही टूट पड़ा। बहन रोती-चिल्लाती हुई एक कमरे से दूसरे कमरे में दौड़ने लगी। जूता बराबर उसका पीछा करता उस पर चोटें करता रहा। बहन बेचारी हैरान-परेशान हो गई। उसके सिर पर इतने जूते पड़े कि सारे बाल ही झड़ गए। अब वह दौड़ी-दौड़ी भाई के पास आई और बोली, 'भैया, अपने इस करामारी जूते को तुम अपने पास बुला लो। देखो, इसने तो मार-मार कर मेरा सिर ही गंजा कर डाला है।' भाई ने कहा, 'जरूर बुला लूंगा, लेकिन पहले मेरा असली चूल्हा और मुर्गी लौटा दो।' बहन खिसिया गई। उसने भाई को उसकी दोनों चीजें तुरंत

सौंप दी। अब लड़के ने जूते से कहा, 'टन-टनाटन आजा जूते छन-छनाछन।' उसी क्षण जूता शांत हो कर लड़के पास चला आया।

दूसरे रोज लड़का अपने घर पहुंचा। वह चूल्हे से तरह-तरह के पकवान मांगता और मां के साथ बैठ कर खाता। सोने के अंडे बेच-बेच कर उसने एक हवेली बनवाई। उसमें वह मां के साथ ठाठ से रहने लगा।

एक रोज वह महल में गया और राजा को झुक-झुक कर सलाम करके बोला, 'मैं आपकी राजकुमारी से ब्याह करना चाहता हूं।' सुन कर राजा के माथे पर बल पड़ गए। बोला, 'छोकरे, तेरी यह मजाल!' फिर सिपाहियों को आदेश दिया, 'इसे कैद में डाल कर रोज दस कोड़े मारे जाएं।' लेकिन लड़के के पास तो करामाती जूता तैयार था। हुक्म पाते ही वह सिपाहियों पर टूट पड़ा। किसी की पगड़ी उड़ी, किसी की टांग टूटी, किसी का माथा फूटा, किसी का थोबड़ा लाल हो गया। थोड़ी ही देर में सबके सब भाग खड़े हुए।

अब राजा ने अपने सेनापति को भेजा। उसका भी वही हाल हुआ। उस पर इतने जूते पड़े कि वह वहीं ढह गया। आखिरकार राजा को अपनी राजकुमारी का ब्याह उस लड़के के साथ करना पड़ा।

अंट-संट

कांटे की एक नोक,
उस पर बसे तीन गांव
दो वीरान और एक में बस्ती ही नहीं।
उनमें पधारे तीन कुम्हार
दो अनगढ़ और एक गढ़ता ही नहीं।
उसने बनाईं तीन हंडियां
दो कच्ची और एक पकी ही नहीं।
उसमें पकाए तीन करेले
दो कड़वे और एक मीठा ही नहीं।
वहां आए तीन मेहमान
दो रोगी और एक खाता ही नहीं।
उसने दिए तीन रुपए
दो खोटे और एक सच्चा ही नहीं।
वहां आए तीन मंत्री
दो अंधे और एक देखता ही नहीं।

नकल बिन अकल

एक पुरोहित था। उसके पड़ोस में एक नाई रहता था। नाई को एक विचित्र आदत थी। जो पुरोहित करे, वह भी करता था। पुरोहित स्नान करे, पूजा-पाठ करे, संध्या करे और माला फेरे, तो वह भी वैसा ही करे। पुरोहित तिलक लगाए, तो वह भी तिलक लगाए। वास्तव में वह पुरोहित की नकल कर उसे चिढ़ाने के लिए ऐसा करता था।

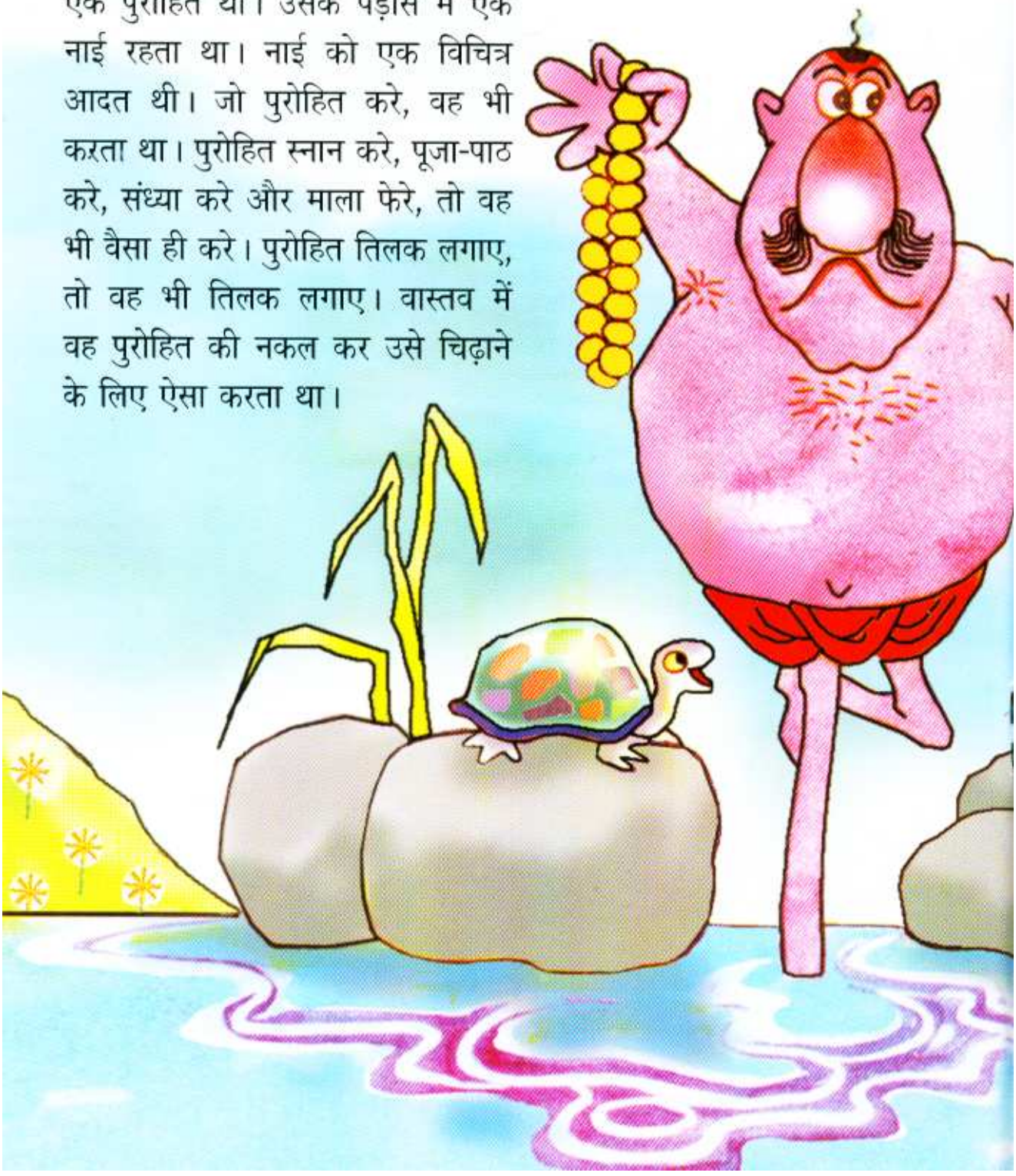

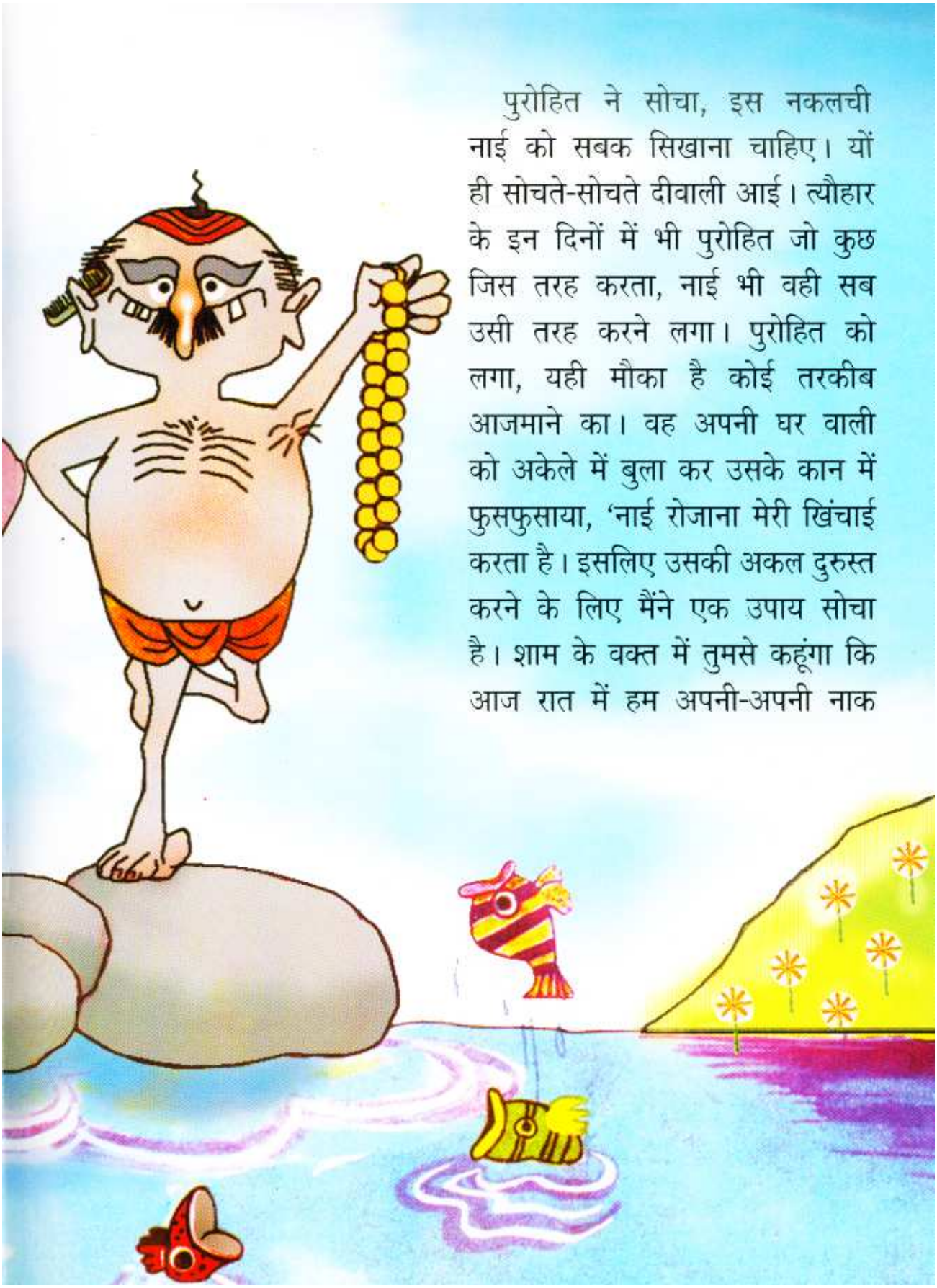

पुरोहित ने सोचा, इस नकलची नाई को सबक सिखाना चाहिए। यों ही सोचते-सोचते दीवाली आई। त्यौहार के इन दिनों में भी पुरोहित जो कुछ जिस तरह करता, नाई भी वही सब उसी तरह करने लगा। पुरोहित को लगा, यही मौका है कोई तरकीब आजमाने का। वह अपनी घर वाली को अकेले में बुला कर उसके कान में फुसफुसाया, 'नाई रोजाना मेरी खिंचाई करता है। इसलिए उसकी अकल दुरुस्त करने के लिए मैंने एक उपाय सोचा है। शाम के वक्त में तुमसे कहूंगा कि आज रात में हम अपनी-अपनी नाक

काट लेंगे और कल नई नाक के साथ दीवाली मनाएंगे। तुम कहना वाह! कमाल! बहुत मजा आएगा।'

ब्यालू करने के बाद रात में पुरोहित ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही घरवाली से कहा, 'सुनती हो कचौड़ी की मां, कल दीवाली है और हम सबको नई नाक के साथ दीवाली मनानी है। आज रात बारह बजे तुम सबकी नाक काट दी जाएगी और कल सवेरे सबको बिल्कुल नई और बढ़िया नाक मिल जाएगी। तुम सब तैयार हो न? नई नाक के साथ दीवाली मनाने का मजा कुछ और ही होता है।' पुरोहित दिखावा तो ऐसा कर रहा था, मानो वह घरवाली से कानाफूसी कर रहा हो, लेकिन वह इतनी ऊंची आवाज में बोल रहा था कि पड़ोस में नाई भी सुन सके।

नाई तो पैदाइशी नकलची था ही। इसलिए उसने मन ही मन सोचा चिंता की कोई बात नहीं। मैंने सब कुछ सुन लिया है। यदि पुरोहित नई नाक से दीवाली मना सकता है तो हम क्यों न मनाएं? पुरोहित को तो किसी से उस्तरा मांग कर लाना पड़ेगा, लेकिन मेरे पास तो पुश्तैनी उस्तरा है। पुरोहित के मुकाबले मैं काफी सफाई से नाक काट सकूंगा। इसलिए पुरोहित के परिवार में जो नई नाकें आएंगी, उससे हमारे घर में कहीं ज्यादा बढ़िया और सुंदर नाकें आएंगी।

सब सो गए। आधी रात होने पर पुरोहित जागा और खटिया पर लेटे-लेटे ही उसने झूठ-मूठ घरवाली से कहा, 'सुनो, तुम यहां आ जाओ। मुझे तुम्हारी नाक काटनी है।' घरवाली भी लेटे-लेटे ही बोली, 'लो, मैं आ गई। अब देर किस बात की। झटपट नाक काट दो।' फिर मानो नाक कट चुकी है, ऐसे तुरंत ही वह जोर-जोर से रोने-चीखने लगी। पुरोहित ने लेटे-लेटे ही कहा, 'रोओ मत। मैं अभी मरहम लगा देता हूं। सवेरे बढ़िया नई नाक आ जाएगी।'

घरवाली झूठ-मूठ बिसूरती हुई-सी सो गई। बाद में पुरोहित ने अपने बच्चों की नाक काटने का ऐसा ही दिखावा किया। थोड़ी देर बाद सब बच्चे ऊं ऊं ऊं ऊं ऊं ऊं ऊं करते हुए सो गए।

अब नाई नाक काटने के लिए तैयार हुआ। उसने सोचा, पुरोहित ने सबकी नाक काट ली। अब मुझे भी काट लेनी चाहिए। फिर उसने अपनी पेटी में से पुश्तैनी उस्तरा निकाला और दबे पांव अपनी घरवाली की खाट के पास जा कर बड़ी सफाई से उसकी नाक उड़ा दी। नाईन चौंक कर उठ बैठी और मारे दर्द के रोने-चीखने लगी। नाई ने कहा, 'रोओ मत। मैं अभी पट्टी बांध देता हूं। सवेरे सुंदर-सुंदर नई नाक आ जाएगी। पुरोहित ने अभी-अभी सबकी नाक काटी है। वे सब नई नाक के साथ दीवाली मनाने वाले हैं। भला हम कैसे पीछे रह सकते हैं।'

नाईन की नाक से लहू बराबर बह रहा था, लेकिन अब और इलाज ही क्या था? बाद में नाई ने बड़ी सिफत से अपनी भी नाक काट ली। उसे भी दर्द तो काफी हुआ, लेकिन नई नाक के साथ दीवाली मनाने के उत्साह में अपनी नाक पर मरहम पट्टी बांध कर वह भी सो गया।

सुबह उठ कर पुरोहित ने ऊंची आवाज में अपनी घरवाली से पूछा, 'कहो तो कचौड़ी की मां, सबको नई नाक कैसी आई है?' उत्तर में घरवाली के साथ बच्चे भी बोल उठे, 'उत्तम, श्रेष्ठतम!' पुरोहित ने फिर पूछा, 'किसी को कोई तकलीफ तो नहीं हुई?' सब बोले, 'तकलीफ कैसी? हम तो घोड़े बेच कर सो गए थे।'

सूरज सिर पर आने लगा। लेकिन नाई और नाईन के नई नाक नहीं आई। उसने यह कह कर अपने मन को समझाया कि हमने देर में नाक काटी थी, इसलिए कुछ देर बाद आएगी, और पड़ोसी के मुकाबले बेहतर

आने वाली है, इसलिए कुछ देर तो लगेगी ही। दोपहर हुई, लेकिन नाक नहीं आई सो नहीं आई।

इसी बीच राजा का सिपाही नाई को बुलाने आया। बोला, 'अरे, अभी तक तुम महल नहीं पहुंचे? महाराज सवेरे से तुम्हारी बाट जोह रहे हैं।' नाई ने कहा, 'महासज से कहना कि उनके नाई ने नई नाक से दीवाली मनाने के लिए अपनी साठ साल पुरानी नाक काट डाली है और नई नाक के इंतजार में वह लेटा है। नई नाक आने पर ही वह आएगा।' यह सुन कर पुरोहित, उसकी घरवाली और बच्चे ठहाका लगा कर हंसने लगे। नाई समझ गया। नकल बिन अकल का नतीजा यही होता है। उस रोज से वह पड़ोसी की नकल करना भूल गया।

बंदरिया खाए सिवइयां

एक थी बुढ़िया। उसका एक बेटा था। एक रोज उसने बुढ़िया से कहा, 'मां मैं धन कमाने दुबई जाऊं?' बुढ़िया बोली, 'बेटा, तुम चले जाओगे तो मैं अकेली हो जाऊंगी। हमारे आंगन में खड़े नीम के पेड़ पर बंदरिया रहती है न, वह मुझे चैन से जीने नहीं देगी।' बेटे ने कहा, 'चिंता की कोई बात नहीं। तुम मेरा लट्ठ अपने पास रखना और जब भी बंदरिया दिखाई दे, उसे फटकारना। साल-भर की तो बात है। समझो यों गया और यों आया।'

मां बूढ़ी थी। मुंह में एक भी दांत नहीं था। वह कुछ भी चबा नहीं पाती थी। इसलिए वह रोज सिवइयां बनाती और ज्यों ही उसे प्लेट में ठंडा करने रखती, पेड़ पर से कूद कर बंदरिया आ पहुंचती। मां लट्ठ उठाती, बंदरिया आंखें सुर्ख करके दांत पीसती। बुढ़िया डर जाती। बंदरिया सारी सिवइयां खा जाती।

बेचारी बुढ़िया रोज भूखी रहती। कभी सूखा आटा फांक कर पानी पी लेती, कभी सिर्फ पानी पी कर गुजारा कर लेती। नतीजा यह निकला कि वह दिन-ब-दिन दुबली होती गई। आंखें गड्ढे में धंस गईं। चेहरा उतर गया। सूख कर वह सलाई-सी हो गई।

जैसे-तैसे एक साल बीता और बेटा लौट आया। उसने बुढ़िया की खस्ता हालत देखी तो हैरान रह गया। बोला, 'मां, तुम इतनी दुबली कैसे हो गई? कौन-सा रोग लगा है तुम्हें?' बुढ़िया ने विस्तार से सारा किस्सा सुनाया। बेटे ने कहा, 'उस बंदरिया को मैं कल देख लूंगा।'

दूसरे रोज मां ने रसोई बनाई। घी चुपड़ कर नरम-नरम फुलके एक प्लेट में रखे और दूसरी प्लेट में गरम-गरम सिवइयां। बैठने के लिए थी पत्थर की चौकी, जो आग में तप कर सुनहरी हो गई थी। अब लड़के ने खुद चल कर आवाज दी :

आओ बंदरिया खाओ सिवइयां गरम-गरम
आओ बंदरिया आसन बिछा है नरम-नरम

बंदरिया तो तुरंत पेड़ पर से कूद कर नीचे आई और जैसे ही चौकी पर बैठी कि बुरी तरह जल गई। वह चीखती-चिल्लाती हुई वहां से ऐसी भागी कि फिर कभी पलट कर उस घर की ओर नहीं देखा।

शायर का भुर्ता

एक थे शायर। नाम था झंडेलाल जानी। उनकी बीवी को बैंगन बहुत पसंद थे। एक रोज उसने अपने मियां को पुकारा, 'जानी रे जानी।' शायर मियां ने कहा, 'बोलो मेरी रानी।' बीवी चहकी, 'आज तो भुर्ता खाने का मन करता है। दो-चार बैंगन ले आओ न।' शायर मियां सिर पर टोपी और कंधे पर झोला डाल चल दिए। थोड़ी ही दूरी पर नदी किनारे एक बाड़ी थी। शायर मियां वहां पहुंचे, लेकिन वहां कोई था नहीं। जब मालिक वहां नहीं है, तो बैंगन किससे पूछ कर लिए जाएं? शायर मियां ने थोड़ी देर सोच कर तय किया कि मालिक नहीं है तो न सही, नदी तो है। हम उसी की इजाजत से लेंगे।

शायर मियां बोले, 'पानी रे पानी।' नदी कुछ नहीं बोली तो वे खुद ही नदी की तरफ से बोले, 'बोल झंडेलाल जानी।' शायर मियां ने पूछा, 'बैंगन ले लूं दो-चार?' नदी मौन रही तो उसकी ओर से शायर मियां ने ही फिर कहा, 'हां-हां, ले लो न दस-बारह।'

शायर मियां ने बड़े-बड़े दर्जन-भर बैंगन झोले में डाले और घर पहुंच कर बीवी को दिए। बीवी ने मिर्च-मसाला डाल कर उनका भुर्ता बनाया। दोनों ने साथ बैठ कर चटखारे लेते हुए खाया। हफ्ते-भर में सारे बैंगन खत्म हो गए।

बीवी को बैंगन भुर्ते का चस्का लग गया। शायर मियां आए-दिन नदी किनारे जाते और बाड़ी में से बैंगन चुरा कर ले आते। धीरे-धीरे बाड़ी में बैंगन कम होने लगे। बाड़ी के मालिक सयानेलाल सानी ने सोचा, जरूर कोई चोर बैंगन चुराने आता होगा!

एक रोज सयानेलाल सवेरे से एक पेड़ की आड़ में छिप कर खड़ा हो गया। घंटे भर बाद शायर मियां झोला लेकर पधारे और बोले, 'पानी रे पानी।' नदी क्या बोलती? इसलिए उन्होंने खुद ही कहा, 'बोलो झंडेलाल जानी।' शायर मियां बोले, 'बैंगन ले लूं दो-चार?' जवाब भी खुद ही ने दिया, 'हां-हां, ले लो दस-बारह।' शायर मियां ने झोला भर कर बैंगन लिए और जैसे ही जाने लगे कि सयानेलाल पेड़ की आड़ में से बाहर निकल कर उनके सामने खड़ा हो गया। फिर पूछा, 'किसकी इजाजत से आपने ये बैंगन लिए?' शायर मियां ने मासूमियत से कहा, 'किसकी इजाजत से? उस नदी की इजाजत से लिए हैं।'

सयानेलाल ने फिर पूछा, 'क्या नदी बोलती है?' शायर मियां बोले, 'नदी नहीं बोलती, लेकिन मैं बोलता हूं न।'

सयानेलाल को गुस्सा आ गया। उसने शायर मियां को रस्से से बांध कर कुएं में उतारा। फिर बोला, 'पानी रे पानी।' कुएं का पानी थोड़े ही बोलेगा? इसलिए सयानेलाल ने खुद ही कहा, 'बोलो सयानेलाल सानी।' सयानेलाल ने पूछा, 'डुबकियां खिलाऊं दो-चार?' कुएं के बजाए फिर से वही बोला, 'खिलाओ दो दस-बारह।' उसने शायर मियां को डुबकियां खिलानी शुरू कीं। वह रस्सा छोड़ता तो शायर मियां पानी में उतर जाते और खींचता तो बाहर आ जाते। उनके नाक, कान, मुंह में पानी भर जाता। वे गिड़गिड़ाने लगे, 'भैया, मुझे माफ कर दो। अब मैं कभी चोरी नहीं करूंगा।'

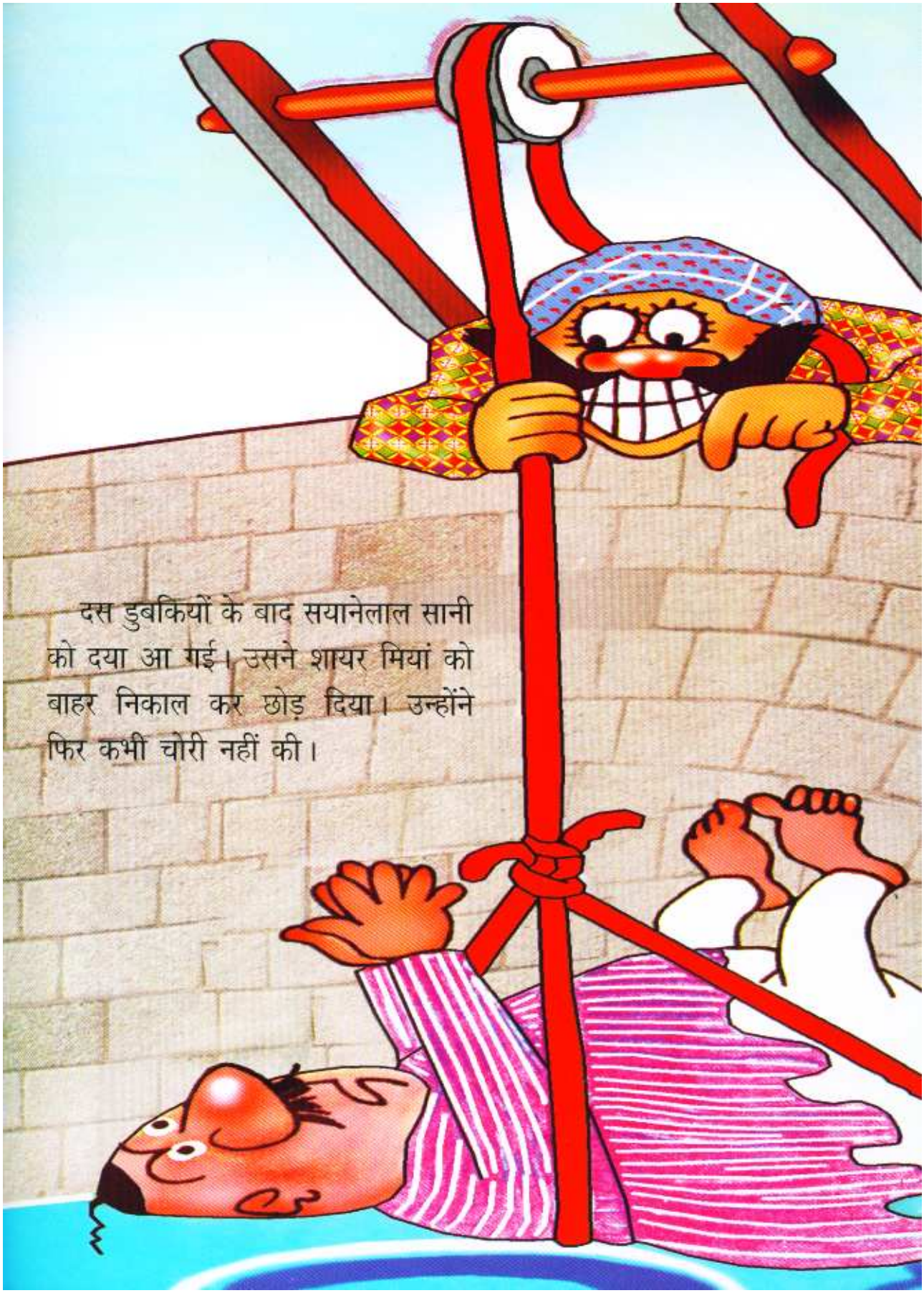

दस डुबकियों के बाद सयानेलाल सानी को दया आ गई। उसने शायर मियां को बाहर निकाल कर छोड़ दिया। उन्होंने फिर कभी चोरी नहीं की।

गंगाराम और मंगाराम

एक था तोता। नाम था गंगाराम। जैसा नाम था, वैसा ही निर्मल उसका मन था। एक रोज उसकी मां ने कहा, 'बेटा, समय बुरा चल रहा है। घर की जमा-पूंजी खत्म होने को है। अब तुम्हें कमाने के लिए बाहर निकलना होगा।' गंगाराम उसी क्षण मां से आशीर्वाद ले घर छोड़ कर चल दिया। उड़ते-उड़ते वह बहुत दूर निकल गया। वहां एक अच्छा बड़ा तालाब था। तालाब के किनारे आम को पेड़ था। वह उस पेड़ पर बैठ गया। पेड़ पर आम लगे थे। तोता आम खाता, डालियां पर झूलता और ऐश करता। एक सुबह वहां से एक चरवाहा गुजरा। उसके साथ सौ गायों का झुंड था। तोते ने उससे प्रार्थना की :

सौ गायों के चरवाहे
रे सौ गायों के चरवाहे
मेरी मम्मी से कहना
मेरी मम्मी से कहना...क्या कहोगे?
तोता भूखा नहीं है
तोता प्यासा नहीं है
तोता अमवा की डाल पर
तोता निर्मल से ताल पर
तोता कच्चे आम खाता है
तोता पक्के आम खाता है
तोता ठुमक-ठुमक नाचना है
तोता गुलछर्रे उड़ाता है

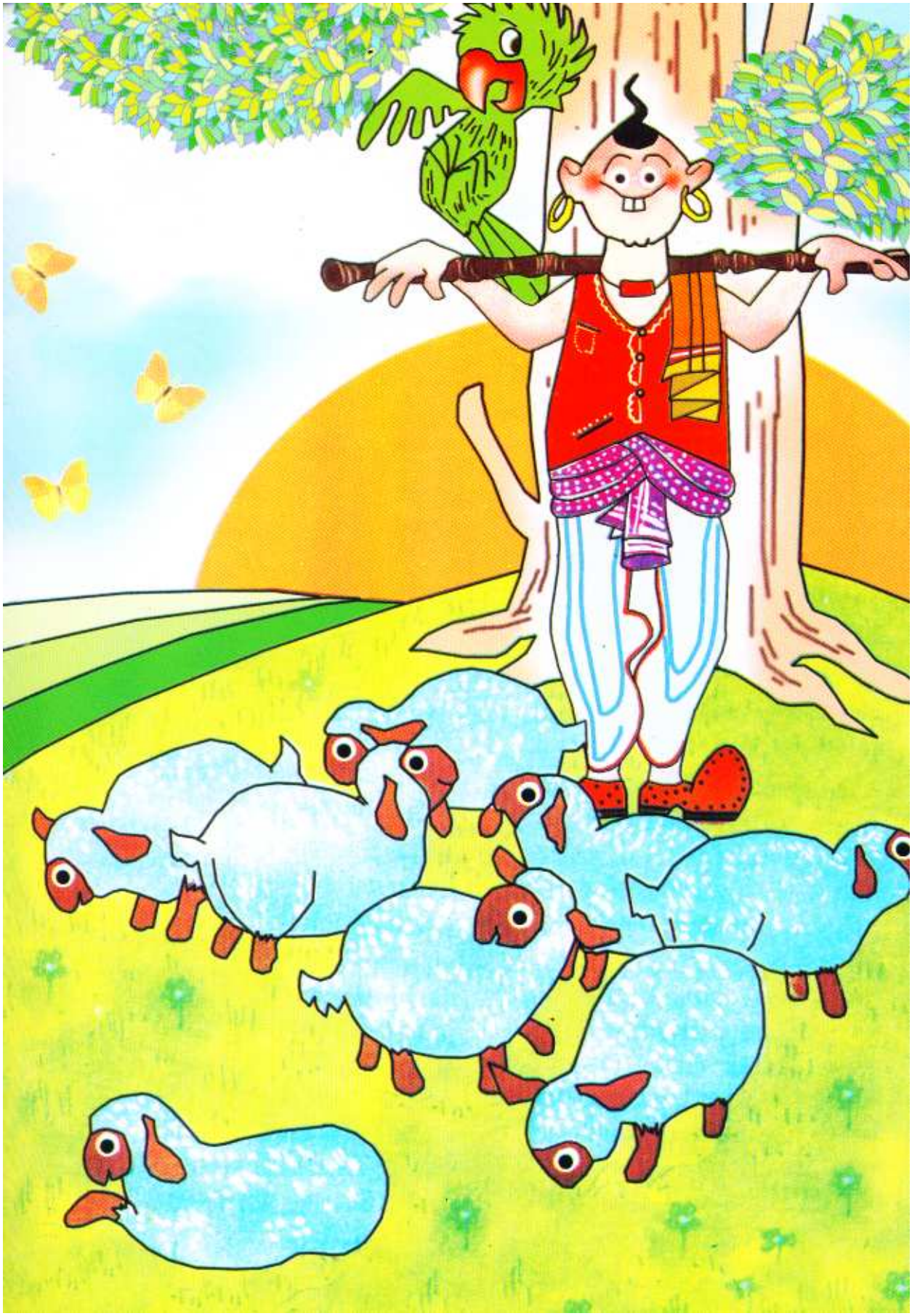

चरवाहे ने कहा, 'गंगारामजी, अपनी इन गायों को छोड़ कर मैं तुम्हारी मां को संदेश पहुंचाने कैसे जा सकता हूं? लेकिन तुम हो भले तोते। चाहो तो एक गाय रख लो।' तोते ने वैसा ही किया। उसने गाय पेड़ से बांध दी।

थोड़ी देर बाद वहां से भैंसों का चरवाहा गुजरा। उसके साथ सौ भैंसों का झुंड था। तोते ने उससे प्रार्थना की :

सौ भैंसों के चरवाहे
रे सौ भैंसों के चरवाहे
मेरी मम्मी से कहना
मेरी मम्मी से कहना...क्या कहोगे?
तोता भूखा नहीं है
तोता प्यासा नहीं है
तोता अमवा की डाल पर
तोता निर्मल से ताल पर
तोता कच्चे आम खाता है
तोता पक्के आम खाता है
तोता ठुमक-ठुमक नाचना है
तोता गुलछर्रे उड़ाता है

चरवाहे ने कहा, 'गंगारामजी, मेरे पास इतना समय कहां? लेकिन तुम हो अपनी मां के आज्ञाकारी बेटे। चाहो तो एक भैंस रख लो।' तोते ने वैसा ही किया। उसने एक भैंस चुन कर पेड़ से बांध दी।

थोड़ी देर बाद वहां से बकरियों का गड़रिया गुजरा। उसने साथ सौ बकरियों का झुंड था। तोते ने उससे प्रार्थना की :

सौ बकरियों के चरवाहे
रे सौ बकरियों के चरवाहे
मेरी मम्मी से कहना
मेरी मम्मी से कहना...क्या कहोगे?
तोता भूखा नहीं है
तोता प्यासा नहीं है
तोता अमवा की डाल पर
तोता निर्मल से ताल पर
तोता कच्चे आम खाता है
तोता पक्के आम खाता है
तोता ठुमक-ठुमक नाचना है
तोता गुलछर्रे उड़ाता है

गड़रिये ने कहा, 'गंगारामजी, इन बकरियों को अकेला छोड़ कर जाऊंगा तो शेर उन्हें खा जाएगा। लेकिन तुम हो नेक तोते। चाहो तो मेरी एक बकरी रख लो।' तोते ने वैसा ही किया। उसने एक बकरी चुन कर पेड़ से बांध दी।

थोड़ी देर बाद वहां से भेड़ों का गड़रिया गुजरा। उसके साथ सौ भेड़ों का झुंड था। तोते ने उससे प्रार्थनी की :

सौ भेड़ों के चरवाहे
रे सौ भेड़ों के चरवाहे
मेरी मम्मी से कहना
मेरी मम्मी से कहना...क्या कहोगे?

तोता भूखा नहीं है
तोता प्यासा नहीं है
तोता अमवा की डाल पर
तोता निर्मल से ताल पर
तोता कच्चे आम खाता है
तोता पक्के आम खाता है
तोता ठुमक-ठुमक नाचना है
तोता गुलछर्रे उड़ाता है

गड़रिये ने कहा, 'गंगारामजी, मेरी एक टांग लकड़ी की है, तुम्हारी मां को संदेश पहुंचाने मैं उतनी दूर कैसे जा सकता हूं? लेकिन तुम हो मियां मिट्ठू। चाहो तो एक भेड़ ले लो।' तोते ने वैसा ही किया। उसने एक भेड़ चुन कर पेड़ से बांध दी।

बाद में वहां से घोड़ों का साइस, ऊंटों का रखवाला और हाथियों का महावत गुजरा। घोड़ों के साइस ने तोते को एक घोड़ा दिया। ऊंटों के रखवाले ने तोते को एक ऊंट दिया। हाथियों के महावत ने तोते को एक हाथी दिया।

अब तोता गाय, भैंस, बकरी, भेड़, घोड़ा, ऊंट और हाथी का काफिला ले कर एक मेले में पहुंचा। वहां उसने इन सारे जानवरों को बेच दिया और जो रुपए मिले, उनसे उसने सोने के जेवर बनवाए और अपने घर की ओर चल दिया। चलते-चलते रात हो गई। घर के सब लोग सो चुके थे। तोते ने कुंडी खटखटा कर पुकारा :

मम्मी ओ मम्मी मेरी प्यारी मम्मी
किवाड़ खोलो खाट बिछाओ

दीये जलाओ शहनाई बजाओ
पंख झाड़ेगा आपका लाड़ला
मम्मी ओ मम्मी जश्न मनाओ

मां ने सोचा, इतनी रात गए मेरा बेटा कैसे आ सकता है? होगा कोई ठग! झूठ-मूठ ये सब कह रहा होगा। उसने दरवाजा नहीं खोला। अब तोता अपनी चाची के घर पहुंचा और दरवाजा खटखटा कर कहा :

चाची ओ चाची मेरी प्यारी चाची
किवाड़ खोलो खाट बिछाओ
दीये जलाओ शहनाई बजाओ
पंख झाड़ेगा आपका लाड़ला
चाची ओ चाची जश्न मनाओ

चाची ने लेटे-लेटे ही सुना दिया, 'माटी-मिले, यह भी कोई आने का समय है? सवेरे आना। मुर्गा बांग देगा, उसके घंटे भर बाद दरवाजा खुलेगा।' निराश हो तोता वहां से अपनी बहन के घर गया और किवाड़ खटखटा कर बोला :

बहना ओ बहना मेरी प्यारी बहना
किवाड़ खोलो खाट बिछाओ
दीये जलाओ शहनाई बजाओ
पंख झाड़ेगा आपका लाड़ला
बहना ओ बहना जश्न मनाओ

बहन की नींद टूटी तो वह गुस्सा हो गई। भीतर से ही उसने फटकारा, 'निगोड़े, भाग यहां से। मेरा भाई पागल थोड़े ही है, जो आधी रात गए

बहन का किवाड़ खटखटाएगा! तू तो कोई उचक्का लगता है। फौरन चंपत हो जा, वरना...'

वहां से तोता कई रिश्तेदारों के घर गया, लेकिन किसी ने उस पर भरोसा नहीं किया। किसी ने दरवाजा नहीं खोला। अंत में वह नानी के घर पहुंचा और दुहाई दी :

नानी ओ नानी मेरी प्यारी नानी
किवाड़ खोलो खाट बिछाओ
दीये जलाओ शहनाई बजाओ
पंख झाड़ेगा आपका लाड़ला
नानी ओ नानी जश्न मनाओ

नानी ने तोते की आवाज पहचान ली। उसने बिस्तर पर से उठते हुए कहा, 'कौन...बेटा गंगाराम? तुम आ गए?' नानी ने किवाड़ खोला। वहीं, चौखट पर तोते ने उनके पांव छुए। नानी ने उसे आसीस दिए। उसके लिए खाट बिछाई। दीए जलाए। फिर जा कर शहनाई वाले को बुला लाई। घर में शहनाई बजने लगी। तोता खुश हो कर नाचने लगा। अपने पंख झाड़ने लगा। पंख में छिपाए जेवर-सोने के कंगन, बाजू-बंद, हार, छल्ले, बूटे, चूड़ियां फर्श पर गिरने लगे और देखते ही देखते वहां उनका ढेर बन गया।

सुबह हुई। सबको पता चला कि तोता कमाई कर के आया है और हजारों के गहने लाया है।

पड़ोस में एक कौआ रहती थी। उसने अपने बेटे मंगाराम से कहा, 'लल्ले, तुम भी कुछ कमा कर लाओ।' उसी रोज कौआ चल दिया। लेकिन कहां राजा भोज और कहां गंगवा तेली! यानी कहां गंगाराम और कहां

मंगाराम। कौवे को तो कूड़ा-करकट और गंदगी अच्छी लगती है। इसलिए वह घूरे पर पहुंचा और अपने पंखों में ठूंस-ठूंस कर कूड़ा भर लिया। जब रात हुई तो वह घर लौटा और तोते की तरह कुंडी खटखटा कर बोला :

मम्मी ओ मम्मी मेरी प्यारी मम्मी
किवाड़ खोलो खाट बिछाओ
दीये जलाओ शहनाई बजाओ
पंख झाड़ेगा आपका लाड़ला
मम्मी ओ मम्मी जश्न मनाओ

बेचारी मां झटपट उठी। तुरंत दरवाजा खोला। खाट बिछाई। दीए जलाए। जब शहनाई बजने लगी तो कौआ खुश हो कर नाचने लगा। अपने पंख झाड़ने लगा। पंख में भरा हुआ सड़ा-गला कूड़ा गिरने लगा। देखते ही देखते सारा घर बदबू से भर गया। कौवी को ऐसा क्रोध आया कि उसने बेटे को जूते मार-मार कर घर से बाहर खदेड़ दिया।

गाती चिड़िया

एक थी चिड़िया। एक रोज वह राजमहल पहुंची। वहां उसे एक गुड्डा मिला। वह खुश हो कर ठुमक-ठुमक नाचने लगी, गाने लगी :

मुझे राजमहल से मिला है गुड्डा
मुझे राजमहल से मिला है गुड्डा

राजा ने यह सुना तो वह भड़क उठा। तुरंत उसने सिपाही को आदेश दिया, 'उस नचनिया से गुड्डा छीन लिया जाए।' जब गुड्डा छीन लिया गया तो चिड़िया गाने लगी :

कंजूस राजा ने छीन लिया है
गुड्डा हमारा, छीन लिया है

राजा ने सोचा, हम तो कंजूस-मक्खीचूस साबित हुए। उसने तुरंत सिपाही से कहा, 'चिड़िया को उसका गुड्डा फौरन लौटा दिया जाए।' गुड्डा वापस मिला तो चिड़िया नाचने-गाने लगी :

यह कैसा डरपोक राजा है जी
जो चिड़िया से भी डरता है जी

इस बार राजा को इतना गुस्सा आया कि उसने तलवार से चिड़िया के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। फिर रसोइए से कहा, 'इन टुकड़ों पर मिर्च-मसाला डालो। मैं इन्हें कच्चा-कच्चा चबा जाऊंगा।' तुरंत रसोइए ने पीली हल्दी, लाल टमाटर और हरी मिर्च डाली। तभी चिड़िया ने तान छेड़ दी :

आज तो मैं लाल पीली हरी बनी
इंद्रधनुष की रंगीन बहन बनी
आज तो मैं लाल पीली हरी बनी
स्वर्गलोक की सुंदर परी बनी

राजा बमका, 'अरे, इस चिड़िया के अंग-अंग में प्राण हैं। इसे फौरन तल डालो, ताकि इसके प्राण निकल जाएं।' रसोइए ने चिड़िया को तेल में छौंका। छन-सी आवाज उठी। फिर भी वह गाने लगी :

चली रे चली मैं तंग गली से चली
चली रे चली मैं तंग गली से चली
मेरे पांव फिसल-फिसल जाएं रे
तंग गली से चली तंग गली से चली

सिपाही भी परेशान। रसोइया भी परेशान। अब क्या किया जाए? राजा ऐंठ कर बोला, 'मेरे पेट की चक्की में चिड़िया पिसेगी तो उसकी बोलती बंद हो जाएगी।' चिड़िया के सारे टुकड़े आंतों के रास्ते राजा के पेट में पहुंच गए, लेकिन जबान बंद न हुई। वह गाने लगी :

कैसे सर्पीले हैं ये रास्ते
छछूंदर-सा है बिल
पसलियों के भवन में
धक-धक करे दिल

यह सुन राजा आग बबूला हो गया और अपने ही बाल नोचने लगा। सिर पीटने लगा। सिपाहियों ने उसे शांत करते हुए बताया, 'महाराज, यह गाती चिड़िया चमत्कारी है। देखना, फुर्र करती अभी बाहर निकलेगी और हम उसका कीमा बना कर उसे जमीन में सौ गज नीचे गाड़ देंगे। तभी उसकी बकवास बंद होगी।'

सारे सिपाही तलवार ले कर राजा को चारों ओर खड़े हो गए। राजा सिंहासन पर बैठा था। उसके एक कान में कुलबुलाहट शुरू हुई। राजा कुछ समझे, इससे पहले उसी कान से निकल कर चिड़िया उसके माथे पर बैठ गई। उसी क्षण सिपाहियों ने तलवार चला दी। चिड़िया झट से उड़ गई। तलवारें राजा की गरदन पर पड़ी। राजा का सिर धड़ से अलग हो गया। तब चिड़िया खिड़की पर बैठ गा रही थी...

जिसका सहारा राम है
उसका भी बड़ा नाम है
सनकी राजा गया परलोक
चिड़िया की बड़ी शान है

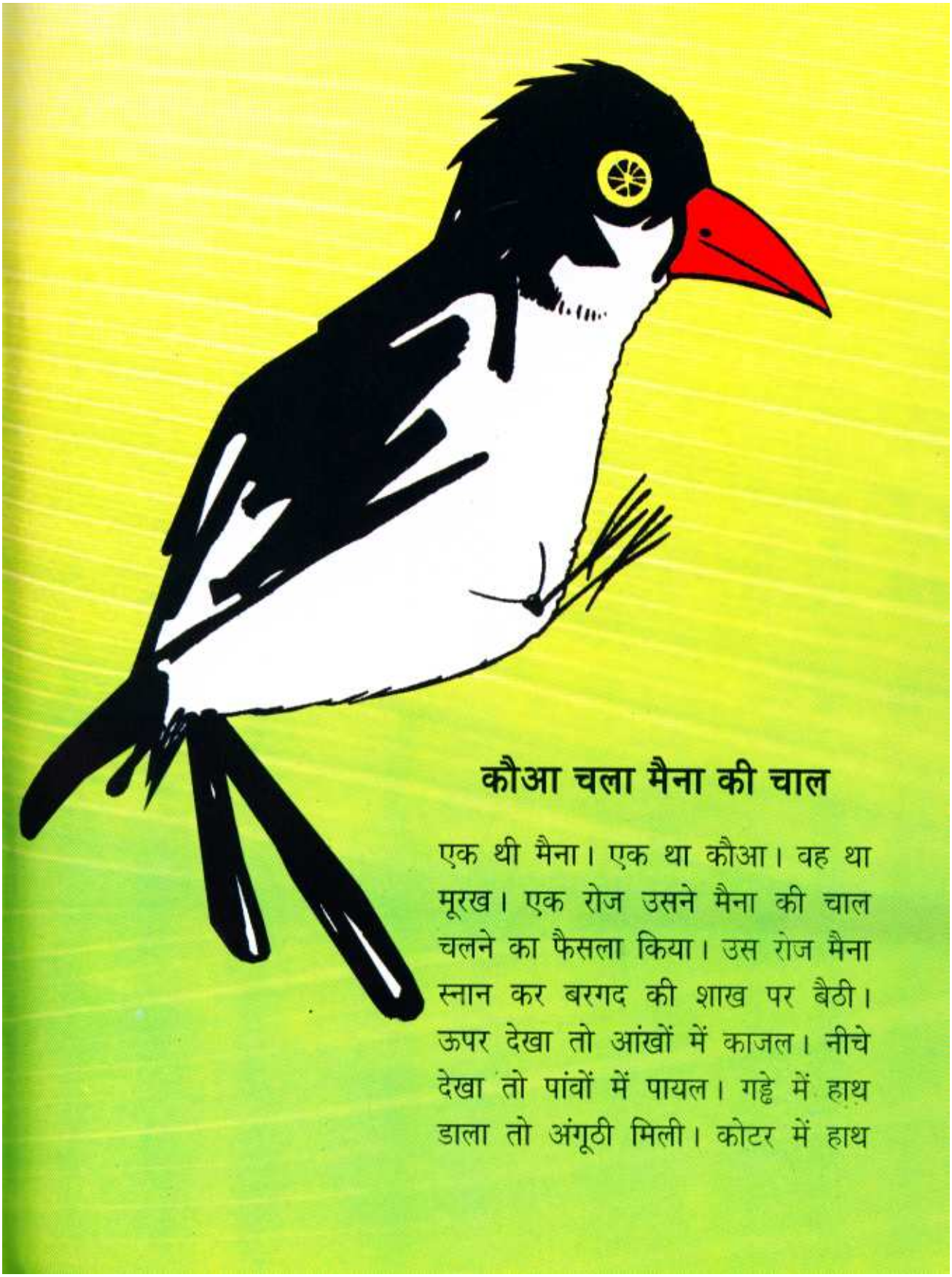

कौआ चला मैना की चाल

एक थी मैना। एक था कौआ। वह था मूरख। एक रोज उसने मैना की चाल चलने का फैसला किया। उस रोज मैना स्नान कर बरगद की शाख पर बैठी। ऊपर देखा तो आंखों में काजल। नीचे देखा तो पांवों में पायल। गड्ढे में हाथ डाला तो अंगूठी मिली। कोटर में हाथ

डाला तो सोना मिला। रेत में डाला तो मोती मिले। चौपाल पर गई तो बग्घी मिली।

दूसरे रोज कौआ भी स्नान कर बबूल की शाख पर बैठा। लेकिन चोंच में थोड़ा मैला रह गया था। इसलिए ऊपर देखा तो एक आंख फूटी। नीचे देखा तो एक टांग टूटी। गड्ढे में हाथ डाला तो बिच्छू ने काटा। कोटर में हाथ डाला तो सांप ने डस लिया। रेत में हाथ डाला तो केकड़े ने झपट्टा मारा। चौपाल पर गया तो उसकी खटिया खड़ी हो गई।

रु. 40.00 ISBN 978-81-237-5150-4

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया